

# कृत्रिम बुद्धिमत्ता का मानव जीवन पर प्रभाव

प्राची त्रिपाठी

असिस्टेंट प्रोफेसर, सेंट फ्रांसिस कॉलेज, कोरमंगला, बंगलुरु.

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.18368479>

## ABSTRACT:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज दुनिया के सबसे चर्चित विषयों में से एक है और अधिकांश लोगों को मानव बुद्धि और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अंतर और समानता के बारे में स्पष्टता नहीं है। ऐसे में सबसे पहले सवाल उठता है कि क्या यह मानव जाति का भविष्य है? या क्या मनुष्य और मशीन वास्तव में एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में हैं? कुछ शोधकर्ताओं और दार्शनिकों का मानना है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानव की क्षमता वृद्धि के रूप में होगी, जिससे प्रौद्योगिकी में सुधार तथा मानव जाति की प्रगति की नई कहानी लिखी जाएगी। कृत्रिम बुद्धिमत्ता 21वीं सदी की सबसे प्रभावशाली तकनीकों में से एक है। यह तकनीक मानव बुद्धि की नकल करते हुए सीखने, तर्क करने, निर्णय लेने और समस्याओं को हल करने की क्षमता प्रदान करती है। आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग शिक्षा, स्वास्थ्य, उद्योग, कृषि, प्रशासन, संचार और मनोरंजन जैसे अनेक क्षेत्रों में हो रहा है। यह शोध पत्र मानव जीवन पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करता है तथा भविष्य की संभावनाओं और चुनौतियों पर प्रकाश डालता है।

## KEYWORDS:

कृत्रिम बुद्धिमत्ता, नैतिकता और चुनौतियाँ, सामाजिक प्रभाव, साहित्य और रचनात्मकता, मानवीय संवेदना.

## भूमिका

21वीं सदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता तेजी से विकसित हो रही है। कुछ कार्यों में यह मनुष्यों से श्रेष्ठ प्रतीत होती है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का अर्थ है मशीनों को इस प्रकार विकसित करना कि वे मानव जैसी सोच, समझ और निर्णय क्षमता प्रदर्शित कर सकें। यह केवल तकनीकी प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह आम मानव जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मानवीय बुद्धिमत्ता आधारित कार्यों को प्रौद्योगिकी की सहायता करने के लिए तैयार है, तो यह स्पष्ट

है कि मानवीय क्षमता रचनात्मक और भावनात्मक रूप से अतुलनीय है। जबकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता में उपलब्ध डेटा के आधार पर कंप्यूटर प्रोग्राम में सीखने और काम पूरा करने की क्षमता है, वहीं मनुष्य के पास रचनात्मकता के साथ सामान्य और भावनात्मक बुद्धि है।

### मानव निर्भरता

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक ऐसी तकनीक है जिसमें मशीनों और कंप्यूटर सिस्टम्स को मानव की तरह सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है। इसे सरल शब्दों में कहें तो, AI मशीनों को “स्मार्ट” बनाने की कला है ताकि वे इंसानों की तरह काम कर सकें। कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर अत्यधिक निर्भरता से मानव की सोचने और निर्णय लेने की क्षमता प्रभावित हो सकती है, जिससे रचनात्मकता में कमी आ सकती है। हम AI को ऐसे काम दे सकते हैं जिन्हें इंसानी दिमाग पूरा नहीं कर पाता। समय बचाने के लिए, हम AI को ऐसे काम भी दे सकते हैं जिन्हें हमारा दिमाग पूरा कर सकता है।

“हमारे पास टेक्नोलॉजी के जरिए समय बचाने का यह अच्छा नज़ारा था। अब तक ऐसा नहीं हुआ है, क्योंकि हम लगातार नए काम लेते जा रहे हैं। मुझे डर है कि AI इस डेवलपमेंट को और तेज़ करेगा, जिससे लोगों पर बोझ बढ़ता जाएगा,” मोइसाला कहते हैं। अगर सच में समय बचता है, तो हम उसका क्या करेंगे? जिन चीज़ों पर हमारा ध्यान जाता है, उनमें से एक है सोशल मीडिया। “सोशल मीडिया के शुरुआती दौर में, लोगों को समझ नहीं आया कि एल्गोरिदम उन्हें कैसे प्रभावित करते हैं।” अब जाकर हमें पता चला है कि वे हमारी मेंटल हेल्थ और ध्यान लगाने की क्षमता के लिए कितने बुरे हैं।

मोइसाला को इस बात की भी चिंता है कि जब सोचने का काम आउटसोर्स किया जाता है, तो दिमाग को डेवलप करने वाली मेहनत छूट जाती है। यही वह मेहनत है जिसने हमें इंसान बनाया है। बिना मेहनत के, दिमाग की कोशिकाओं के बीच कनेक्शन का नेटवर्क कमज़ोर हो सकता है।

### मानवता का बदलता चेहरा

हालांकि AI फैसला लेने वालों के लिए एक असरदार टूल हो सकता है, लेकिन खतरा यह है कि वे इस पर बहुत ज़्यादा निर्भर हो जाएंगे और फैसले लेने की अपनी काबिलियत पर उनका भरोसा कम हो जाएगा। क्या इंसानियत का कोई ज़रूरी पहलू गायब हो रहा है?

अगर मैं अब खुद नहीं सोचता, तो क्या इसका मतलब है कि मैं अब नहीं रहूंगा? “होना और सोचना खत्म नहीं होगा, लेकिन वे बदल सकते हैं, जिसका मतलब है कि इंसानियत भी बदल जाएगी,” टेलाकीवी कहते हैं। अपने दिमाग से चीजों को समझना भी ज़िंदगी को मतलब देता है। समझने की खुशी को मत छोड़ो, चाहे हम कुछ भी बन जाएं।

### कृत्रिम बुद्धिमत्ता का विकास और मानव जीवन पर सकारात्मक प्रभाव

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अवधारणा 1950 के दशक में एलन ट्यूरिंग द्वारा प्रस्तुत “ट्यूरिंग टेस्ट” से प्रारंभ मानी जाती है। प्रारंभ में AI केवल गणनात्मक समस्याओं तक सीमित थी, किंतु आज यह डेटा विश्लेषण, छवि पहचान, भाषायी अनुवाद और स्वायत्त निर्णय लेने में सक्षम हो चुकी है। बिग डेटा और तेज़ कंप्यूटिंग शक्ति ने इसके विकास को नई गति दी है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का मानव जीवन पर प्रभाव दोहरा है—यह अनेक क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन लाती है, वहीं कुछ गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न करती है।

सकारात्मक प्रभावों की दृष्टि से शिक्षा के क्षेत्र में AI आधारित शिक्षण प्रणालियाँ छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराती हैं। स्मार्ट ट्यूटर, ऑनलाइन मूल्यांकन और वर्चुअल क्लासरूम के माध्यम से शिक्षा अधिक सुलभ, रोचक और प्रभावी बनी है। स्वास्थ्य सेवाओं में AI रोगों के शीघ्र निदान, मेडिकल इमेजिंग, दवा अनुसंधान तथा रोबोटिक सर्जरी में सहायक सिद्ध हुई है, जिससे उपचार की गुणवत्ता में सुधार हुआ है और जीवन रक्षा संभव हो पाई है। उद्योगों में AI और स्वचालन से उत्पादन क्षमता बढ़ी है तथा जोखिमपूर्ण कार्य मशीनें सुरक्षित रूप से कर रही हैं, जिससे श्रमिकों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है। दैनिक जीवन में स्मार्ट होम, वर्चुअल असिस्टेंट, ट्रैफिक प्रबंधन और ऑनलाइन सेवाओं ने जीवन को अधिक सुविधाजनक बनाया है।

नकारात्मक प्रभावों की बात करें तो स्वचालन के कारण पारंपरिक रोजगार पर संकट उत्पन्न हुआ है और कई क्षेत्रों में बेरोजगारी की आशंका बढ़ी है। AI आधारित प्रणालियों द्वारा बड़े पैमाने पर डेटा संग्रह से गोपनीयता और साइबर सुरक्षा को खतरा उत्पन्न होता है। साथ ही, नैतिक मूल्यों की कमी, भेदभावपूर्ण एल्गोरिदम और गलत निर्णय सामाजिक असमानता को बढ़ा सकते हैं। अतः AI का उपयोग संतुलित और उत्तरदायी ढंग से किया जाना आवश्यक है।

## नैतिकता और उत्तरदायित्व

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के विकास के साथ नैतिक प्रश्न भी उत्पन्न होते हैं। कृत्रिम बुद्धि को लेकर दावा किया जाता है कि यह मानव की बुद्धि का एक केंद्रीय संपत्ति के रूप में मशीन द्वारा अनुकरण कर सकती है। वहाँ दार्शनिक मुद्दों और प्राणी बनाने की नैतिकता के बारे में प्रश्न उठाए गए थे। लेकिन आज, यह प्रौद्योगिकी उद्योग का सबसे महत्वपूर्ण और अनिवार्य हिस्सा बन गया है। यह आवश्यक है कि AI का उपयोग मानव कल्याण के लिए हो, न कि नियंत्रण या शोषण के लिए। पारदर्शिता, निष्पक्षता और जवाबदेही AI प्रणालियों के विकास में अनिवार्य होनी चाहिए। स्टीफन हॉकिंग के अनुसार, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और इसके संभावित इस्तेमाल को बहुत सावधानी से मैनेज करने की ज़रूरत है, ताकि इसकी शक्ति गलत हाथों में न पड़े या इसका इस्तेमाल ऐसे तरीके से न हो जिससे पूरी इंसानियत को फायदा न हो।

संक्षेप में, AI बनाने में सफलता, हमारी सभ्यता के इतिहास की सबसे बड़ी घटना हो सकती है। लेकिन यह आखिरी भी हो सकती है, जब तक हम जोखिमों से बचना नहीं सीखते। “फायदों के साथ-साथ, AI खतरे भी लाएगा, जैसे शक्तिशाली ऑटोनॉमस हथियार, या कुछ लोगों के लिए बहुत से लोगों पर अत्याचार करने के नए तरीके। यह हमारी अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ी उथल-पुथल लाएगा”, हॉकिंग ने आगे कहा। हॉकिंग ने अपने भाषण का समापन इस विचार के साथ किया कि “AI या तो इंसानियत के साथ होने वाली सबसे अच्छी, या सबसे बुरी चीज़ होगी। हमें अभी तक नहीं पता कि कौन सी।” हालांकि, उनका यह भी मानना है कि यह टेक्नोलॉजी दुनिया के लिए बहुत फायदेमंद हो सकती है और इसका इस्तेमाल बीमारियों और गरीबी को रोकने के लिए किया जा सकता है।

### भविष्य की संभावनाएँ

भविष्य में AI मानव जीवन को और अधिक उन्नत बना सकती है। स्मार्ट शहर, स्वायत्त वाहन, उन्नत चिकित्सा और अनुसंधान में AI की भूमिका और बढ़ेगी। यदि इसे सही दिशा में नियंत्रित किया जाए, तो यह मानव समाज के लिए वरदान सिद्ध हो सकती है। हाल ही में एलन मस्क की कंपनी न्युरालिंक ने पहली बार इंसानी दिमाग में AI चिपसेट को इंप्लांट किया है। कंपनी ने इस चिपसेट का नाम टेलीपैथी रखा है, जो दिव्यांगों के लिए काफी उपयोगी होने वाली है, क्योंकि इस टेलीपैथी चिपसेट की मदद से विकलांग लोग अपने दिमाग से ही बिना कंप्यूटर

और स्मार्टफोन को छुए कंट्रोल कर पाएंगे। साथ ही एलन मस्क का कहना है कि उनकी कंपनी 2030 तक 22000 से अधिक विकलांग लोगों के दिमाग में यह चिपसेट लगाकर उनकी मदद करेगी।

**कृत्रिम बुद्धिमत्ता: सामाजिक विकास और सतत भविष्य की दिशा में एक सशक्त उपकरण**

**(एंजेलिकी डेडोपूलू के विचारों के संदर्भ में)**

1. इक्कीसवीं सदी को तकनीकी क्रांति का युग कहा जा सकता है और इस क्रांति का सबसे प्रभावशाली रूप कृत्रिम बुद्धिमत्ता है। जिस प्रकार विद्युत ऊर्जा ने औद्योगिक और सामाजिक जीवन को नई दिशा दी, उसी प्रकार AI आज मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में परिवर्तनकारी भूमिका निभा रही है। एंजेलिकी डेडोपूलू के विचारों के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि AI केवल एक तकनीकी साधन नहीं, बल्कि सामाजिक विकास और वैश्विक समस्याओं के समाधान की एक महत्वपूर्ण कुंजी है।
2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का सबसे बड़ा योगदान मानव जीवन को अधिक सरल, सुरक्षित और कुशल बनाना है। स्वास्थ्य क्षेत्र में AI रोगों की शीघ्र पहचान, सटीक उपचार योजना और महामारी नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी के दौरान AI आधारित डेटा विश्लेषण और पूर्वानुमान प्रणालियों ने नीति-निर्माताओं को समय पर निर्णय लेने में सहायता प्रदान की। शिक्षा के क्षेत्र में AI व्यक्तिगत अधिगम (Personalized Learning) को बढ़ावा देकर छात्रों की रुचि, क्षमता और गति के अनुसार शिक्षण को संभव बना रही है, जिससे शिक्षा अधिक समावेशी बन रही है।
3. कार्यस्थलों और अर्थव्यवस्था में भी AI का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। साथ ही डिजिटल युग की आवश्यकताओं के अनुरूप नए प्रकार के रोजगार के अवसर भी सृजित हो रहे हैं। पर्यटन, कृषि, निर्माण और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में AI उत्पादकता और दक्षता बढ़ाने का कार्य कर रही है। हालाँकि, AI के बढ़ते उपयोग के साथ कुछ गंभीर सामाजिक चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। डेटा पर आधारित AI प्रणालियाँ यदि सावधानीपूर्वक विकसित न की जाएँ, तो वे जाति, लिंग, आयु या सामाजिक पृष्ठभूमि के आधार पर पक्षपातपूर्ण निर्णय दे सकती हैं। इससे सामाजिक असमानता और भेदभाव को बढ़ावा

मिल सकता है। इसलिए AI के विकास और उपयोग में नैतिकता, पारदर्शिता, समानता और उत्तरदायित्व को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाना चाहिए।

4. सतत विकास के क्षेत्र में AI की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह जलवायु परिवर्तन से निपटने, प्रदूषण नियंत्रण, कार्बन उत्सर्जन में कमी और नवीकरणीय ऊर्जा प्रबंधन में सहायक सिद्ध हो रही है। स्मार्ट कृषि, जल प्रबंधन और हरित ऊर्जा प्रणालियाँ AI के माध्यम से वैश्विक संसाधनों के संतुलित उपयोग को संभव बना रही हैं।

निष्कर्षतः, कृत्रिम बुद्धिमत्ता में समाज और मानवता के कल्याण की अपार संभावनाएँ निहित हैं। आवश्यकता इस बात की है कि इसका उपयोग मानव-केंद्रित, नैतिक और उत्तरदायी दृष्टिकोण से किया जाए। तभी AI वास्तव में एक बेहतर, समान और सतत भविष्य का निर्माण कर सकेगी।

### **कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संदर्भ में साहित्य की चुनौतियाँ: मौलिकता, रचनात्मकता और मानवीय संवेदना**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बढ़ते प्रयोग ने साहित्य और रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में नई संभावनाओं के साथ-साथ कई गंभीर प्रश्न भी खड़े कर दिए हैं। विशेष रूप से मौलिकता और लेखकीय अधिकार, रचनात्मकता पर तकनीक की निर्भरता, तथा मानवीय संवेदना के ह्रास जैसे विषय आज साहित्यिक विमर्श के केंद्र में हैं।

सबसे पहला और महत्वपूर्ण प्रश्न मौलिकता और लेखकीय अधिकार का है। साहित्य की आत्मा मौलिक सृजन में निहित होती है। लेखक अपने अनुभव, संवेदना, सामाजिक परिवेश और विचारों के आधार पर रचना करता है। किंतु AI द्वारा निर्मित रचनाएँ पहले से उपलब्ध पाठों और डेटा पर आधारित होती हैं। ऐसी स्थिति में यह तय करना कठिन हो जाता है कि रचना का वास्तविक लेखक कौन है—मनुष्य या मशीन? यदि कोई लेखक AI की सहायता से कविता या कहानी लिखता है, तो उसके लेखकीय अधिकार किसके माने जाएँ? यह समस्या साहित्यिक चोरी (Plagiarism) और बौद्धिक संपदा अधिकार (Intellectual Property Rights) को लेकर नई जटिलताएँ उत्पन्न करती है। बिना स्पष्ट नैतिक और कानूनी ढाँचे के AI का प्रयोग साहित्य की मौलिकता को चुनौती दे सकता है।

दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष है रचनात्मकता पर तकनीक की निर्भरता।

AI लेखकों को कथानक, शब्द चयन और शैली में सहायता अवश्य देता है, परंतु अत्यधिक निर्भरता लेखक की स्वयं की सृजनशीलता को सीमित कर सकती है। जब लेखक सोचने, कल्पना करने और भाषा के साथ प्रयोग करने के स्थान पर तकनीक पर आश्रित हो जाता है, तो उसकी रचनात्मक क्षमता कुंठित होने लगती है। साहित्य केवल सूचना या संरचना का खेल नहीं है, बल्कि यह कल्पना, प्रयोग और जोखिम उठाने की प्रक्रिया है। यदि रचनाकार हर स्तर पर तकनीक पर निर्भर होगा, तो साहित्य एक यांत्रिक प्रक्रिया बन सकता है, जिसमें नवीनता और वैचारिक साहस का अभाव होगा।

तीसरा और सबसे संवेदनशील मुद्दा है मानवीय संवेदना का ह्रास। साहित्य मनुष्य के सुख-दुःख, प्रेम-घृणा, संघर्ष और करुणा की अभिव्यक्ति है। AI भावनाओं की नकल तो कर सकता है, परंतु वह उन्हें वास्तव में अनुभव नहीं कर सकता। मानवीय पीड़ा, सामाजिक अन्याय, मातृत्व की भावना या देशप्रेम जैसी अनुभूतियाँ मशीन के लिए केवल डेटा होती हैं। यदि साहित्य में AI का प्रभुत्व बढ़ता है, तो रचनाओं में भावनात्मक गहराई और आत्मिक स्पर्श कम हो सकता है। इससे साहित्य का मानवीय पक्ष कमजोर पड़ने का खतरा है।

निष्कर्षतः, कृत्रिम बुद्धिमत्ता साहित्य के लिए एक उपयोगी साधन हो सकती है, किंतु उसे सृजन का स्वामी नहीं बनाया जा सकता। लेखक को चाहिए कि वह AI का प्रयोग सहायक के रूप में करे, न कि अपने विचार, संवेदना और मौलिकता के विकल्प के रूप में। संतुलित और विवेकपूर्ण उपयोग ही साहित्य की आत्मा और गरिमा को सुरक्षित रख सकता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी साहित्य और दैनिक जीवन को गहराई से प्रभावित कर रही है, जिसमें रचनात्मकता बढ़ाने से लेकर पहुंच बढ़ाने तक के बदलाव शामिल हैं। ये परिवर्तन नवाचार लाते हैं लेकिन सांस्कृतिक प्रामाणिकता पर चुनौतियाँ भी पैदा करते हैं, विशेष रूप से भारत जैसे हिंदी भाषी देश में। हिंदी साहित्य पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रभाव हिंदी कविताएँ, कहानियाँ और नाटक उत्पन्न करने में सहायक है, जो लेखकों को मंथन और संपादन में मदद करते हैं।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का हमारे रोजमर्रा के जीवन में हावी होते नतीजे को दिखाती फिल्म, 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' जो 2024 में रिलीज हुई थी। इसमें यही दिखाने का प्रयास किया गया है कि किस तरह से अगर हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आधार पर किसी रोबोट को तैयार

भी करें तो उसमें भावनात्मक संवेदनाओं का हमेशा अभाव ही रहेगा। मानवीय बुद्धि पर आधारित समाज और भावनात्मक रिश्तों का समागम कभी भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता से नहीं हो सकता। इसके उदाहरण स्वरूप फिल्म की समीक्षा करना बहुत ही प्रासंगिक है।

### **फ़िल्म 'तेरी ही बातों में ऐसा उलझा जिया': AI के संदर्भ में एक सामाजिक-मानवीय समीक्षा**

आधुनिक हिंदी सिनेमा में तकनीक और मानवीय संवेदना के संबंधों को केंद्र में रखकर बनी फ़िल्में तेजी से उभर रही हैं। वर्ष 2024 में प्रदर्शित फ़िल्म "तेरी ही बातों में ऐसा उलझा जिया" इसी प्रवृत्ति का प्रतिनिधि उदाहरण है। यह फ़िल्म एक रोमांटिक कथा के माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मानवीय भावनाओं, अकेलेपन और तकनीक-निर्भर समाज के मनोविज्ञान पर विचारोत्तेजक दृष्टि प्रस्तुत करती है। फ़िल्म की कथा आर्यन नामक युवक और एक अत्याधुनिक AI-आधारित महिला रोबोट 'सिफ़रा' के इर्द-गिर्द घूमती है। सिफ़रा को इस प्रकार प्रोग्राम किया गया है कि वह मानवीय भावनाओं, संवाद और व्यवहार की सटीक नकल कर सके। आर्यन का उससे भावनात्मक रूप से जुड़ जाना दर्शक को इस प्रश्न से रूबरू कराता है कि क्या मशीनों के साथ विकसित संबंध वास्तविक माने जा सकते हैं या वे केवल तकनीकी भ्रम हैं।

दर्शकों की प्रतिक्रियाएँ इस फ़िल्म को लेकर विभाजित दिखाई देती हैं। एक वर्ग इसे तकनीक-समर्थक दृष्टि से देखता है और मानता है कि AI अकेलेपन से जुड़ रहे लोगों के लिए भावनात्मक सहारा बन सकती है। वहीं दूसरा वर्ग फ़िल्म को चेतावनी के रूप में देखता है, जहाँ मशीनों पर बढ़ती निर्भरता मनुष्य को वास्तविक सामाजिक संबंधों से दूर कर सकती है। निष्कर्षतः, "तेरी ही बातों में ऐसा उलझा जिया" एक साधारण प्रेमकथा न होकर तकनीक और मानव संवेदना के टकराव पर आधारित सार्थक फ़िल्म है। यह दर्शक को AI के आकर्षण और उससे जुड़े भय—दोनों पर संतुलित रूप से सोचने के लिए प्रेरित करती है।

### **निष्कर्ष**

कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने मानव जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। इसके सकारात्मक प्रभाव जहाँ जीवन को सरल, सुरक्षित और उन्नत बनाते हैं, वहीं इसके नकारात्मक पक्ष चुनौतियाँ भी प्रस्तुत करते हैं। अतः आवश्यक है कि AI का संतुलित, नैतिक और मानव-केंद्रित उपयोग किया जाए। सही नीतियों और जागरूकता के माध्यम से कृत्रिम बुद्धिमत्ता को

मानव विकास का सशक्त साधन बनाया जा सकता है। जीवन में होने वाले अधिकांश परिवर्तनों की तरह, कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा हमारे जीवन को लगातार बदलते रहने से समाज पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव पड़ेंगे। ये प्रभाव किस हद तक संतुलित होंगे, यह कहना मुश्किल है और इस पर काफी बहस और विचार-विमर्श की गुंजाइश है। एक आशावादी होने के नाते, मेरा मानना है कि ये परिवर्तन अधिकतर अच्छे होंगे, लेकिन कुछ लोगों के लिए चुनौतीपूर्ण भी हो सकते हैं।

### संदर्भ ग्रंथ-

1. <https://www.helsinki.fi/en/news/human-centric-technology/artificial-intelligence-changing-society-brain-and-humanity>
2. <https://betanews.com/2016/10/21/artificial-intelligence-stephen-hawking>
3. Dedopoulou, Angeliki. Artificial Intelligence can solve societal challenges and reduce climate change. Public Policy Manager, AI & Fintech, Meta, Belgium.
4. Russell, S. & Norvig, P. Artificial Intelligence: A Modern Approach.
5. UNESCO Report on Artificial Intelligence and Ethics.
6. भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय – AI नीति दस्तावेज़।

#### **Funding:**

This study was not funded by any grant.

#### **Conflict of interest:**

The Authors have no conflict of interest to declare that they are relevant to the content of this article.

#### **About the License:**

© The Authors 2024. The text of this article is open access and licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.